वाराणसी (भारत)
अक्टूबर १६, २००१

सन्देश संख्या ४३

आनन्दमय बोध के पचास रत्न

१. जब तक आप स्वयं से आरम्भ नहीं करते, आप चाहे जो भी कर लें, आपको दुःखों से छुटकारा नहीं मिल सकता है।

२. 'देखने वाला' न कि 'देखना', अनुभव करता है। 'देखने वाला' के बिना किसी हस्तक्षेप के 'देख पाना', ही स्थिरत्व है।

३. कोई भी शास्त्र परम पावन नहीं है। ये समाचार पत्र की भाँति कागज पर मुद्रित शब्द मात्र हैं। परम पावन जीवन ग्रन्थ तो वह है जिसको पढ़ने पर आत्मकेन्द्रित गतिविधियाँ समाप्त हो जाती हैं।

४. अहंकेन्द्र की परावलम्बन से मुक्ति उधारी ज्ञान से नहीं बल्कि प्रत्यक्षबोध से ही संभव है।

५. आध्यात्मिक संदर्भों में परावलम्बन सम्पूर्ण समझदारी को न कर देता है।

६. मनुष्य की महानता इसी में है कि कोई दूसरा उसका उद्धार नहीं कर सकता है। उसे तो स्वयं ही अपना उद्धार करना है।

७. सत्य मुक्ति प्रदान करता है न कि मुक्त होने की आपाधापी।

८. निरासक्त स्नेह सदैव शुद्ध क्रिया में रहता है, प्रतिक्रिया में नहीं।

९. एक शाश्वत सत् है। वह तभी प्रकट हो सकता है जब चित्तवृत्ति से भ्रम और भ्रान्ति का पर्दा उठ जाए। उस व्यक्ति से सावधान रहें जो आकषक वायदे करता है, क्योंकि इसी से शोषण की शुरूआत होती है। यह उसके द्वारा फैलाया गया एक जाल है जिसमें आप मछली की भाँति फँस जाते हैं।

१०. विश्वास–पद्धति का अनुयायी होना धार्मिक होना नहीं है। सभी विश्वास पद्धतियाँ मन की आत्मसंरक्षी–यंत्ररचनायें हैं।

११. आध्यात्मिक संदर्भ में स्पष्ट दृष्टि ही पर्याप्त है न कि विकल्पों में उलझना।

१२. क्षुद्र मन द्वारा सृजित ईश्वर क्षुद्र ही होगा।

१३. अनुभव जीवन की अभिव्यक्ति है। किन्तु, मात्र इनका संचय दुःखों की जड़ है। मात्र एक अनुभव के सम्पूर्ण बोध में भी मुक्ति तथा पूर्णता का आनन्द प्राप्त हो सकता है।

१४. स्वार्थ–बुद्धि में न फँसें किन्तु उन विचारों के प्रति जागरूक रहें जो स्वार्थ बुद्धि को प्रोत्साहित करते हैं।

१५. वास्तविक नैतिकता स्वैच्छिक क्रिया है न कि भय और लोभ से उत्पन्न प्रतिक्रिया।

१६. लोभ एक पूर्वाग्रह है जो दृष्टि की स्पष्टता को न कर देता है और अस्तित्व के प्रत्यक्षबोध में बाधा उत्पन्न करता है।

१७. अहंकार अवरूद्ध या अपूर्ण क्रिया का प्रतिफल है। यह चित्तवृत्ति की गतिविधियों का परिणाम है अतः भ्रामक एवं मनगढ़ंत है।

१८. यथार्थ से भागने से ही भय की उत्पत्ति होती है।

१९. चित्तवृत्ति उस शाश्वत के सम्बन्ध में आपकी समझदारी पर परदा डाल देता है।

२०. मन की नासमझी की समझ ही वास्तविक समझदारी (प्रज्ञा) है।

२१. सत्य की खोज के क्रम में आप झूठ को ही पायेंगे। 'जागकर देखने' से सत्य प्रकट होता है न कि खोजने से।

२२. जीवन जीवन्त है। इसमें मन के हस्तक्षेप का कोई प्रयोजन नहीं है।

२३. द्वन्द्व एवं दंभ से मुक्त जीवन प्रवाह में ही इसकी अकल्पनीय गहराइयों का थाह मिलता है।

२४. जीवन्तता उन्हें प्राप्त होती है जिनके पास एक सतर्क, सुग्राही और पूर्वाग्रहों से मुक्त मस्तिष्क है।

२५. प्रज्ञा व्यवस्था लाती है, न कि अनुशासन।

२६. 'आदर्श' और 'वाद' लोगों को रूपान्तरित नहीं करते हैं। आदर्शों के बंधन से मुक्ति ही रूपान्तरकारी है। यह मुक्ति परिपक्वता है जबकि 'आदर्श' मन की वृत्तियों के अंतर्गत होने के कारण अपरिपक्वता है।

२७. ध्यानस्थ चैतन्य सतत जागरूकता, सतत ग्राह्यता और दृष्टि की स्पष्टता है।

२८. व्याख्याओं से सावधान रहें क्योंकि जिसकी व्याख्या की जा सकती है वह सत्य नहीं है।

२९. प्रशान्ति वह है, जो तब भी जारी रहती है जब लाहिड़ी बोल रहा होता है।

३०. ज्ञात से मुक्ति ही प्रज्ञा का बोध है।

३१. जब आप बिना अपने आपको परिवर्तित करने का प्रयास किये यह समझना शुरू करते हैं कि आप क्या हैं तब आपमें रूपान्तरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

३२. जीवन से प्रेम करें क्योंकि जीवन वास्तविकता है।

३३. चाटुकारिता और अपमान नासमझी से पैदा होते हैं। दोनों को ही समभाव से स्वीकार करें।

३४. तत्व शाश्वत है।

३५. प्रत्येक अनुभव अनिवार्यतः अनुभवों से मुक्ति यानी कि शून्यता की ओर ले जानेवाली प्रक्रिया को तीव्र करने वाला होना चाहिए।

३६. थोड़े से संतुष्ट हो जाना आध्यात्मिकता नहीं है बल्कि 'अल्प' एवम् 'अधिक', दोनों से ही मुक्त हो जाना आध्यात्मिकता है।

३७. दुःखभोग ही मनुष्य को दुःख से मुक्त करता है।

३८. सुकोमल क्षण एवं निरावलम्बन की गहन अवस्था में परम प्रज्ञा की पवित्रता, पावन ऊर्जा का परमानन्द, शुद्ध शून्यता का आशीर्वाद एवं सर्वव्यापी पूर्णता का जन्म होता है।

३९. प्रेम की ज्वाला में सभी प्रकार के भय भस्मीभूत हो जाते हैं।

४०. मनुष्य भगवत्ता है क्योंकि वह जीवन है। मतों, प्रथाओं, मताग्रहों, सिद्धान्तों, पूर्वाग्रहों एवं पूर्वकल्पित धारणाओं से मुक्त होयें, अपनी सोच सीधी एवं सरल रखें।

४१. जिस व्यक्ति ने जीवन का स्पर्श खो दिया है, वह तन्त्र–मन्त्र तथा रहस्यवाद को ही सत्य की ओर ले जाने वाला मार्ग मानता है।

४२. सतत नवीनीकृत जीवनधारा में मृत्यु तो एक सहज घटना है।

४३. जीवन केवल गति है, प्रगति की किसी अवधारणा का गमन नहीं।

४४. करुणा विचार की छाया नहीं बल्कि स्वयं प्रकाश है। यह न तो आपकी है और न ही मेरी। यह सबकी (सार्वभौम) है।

४५. सांसारिक और आध्यात्मिक जीवन के मध्य द्वन्द्व सांसारिकता है।

४६. क्या हम उनसे प्रेम कर सकते हैं जो हमसे घृणा करते हैं और हमसे द्वेष रखते हैं? यह पता करने का प्रयास करें कि वे ऐसा क्यों करते हैं? इसे जानने के बाद हमारा उत्तर क्या होगा? क्या हमें घृणा का उत्तर घृणा से और रोष का उत्तर रोष से देना चाहिए? यदि ऐसा किया जाता है तो इसका परिणाम क्या होगा? क्या हम हजारों वर्षों से ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में असफल नहीं रहे हैं? यदि हम अब भी इसका उत्तर देने में असफल रहे तो हमें भविष्य में दुबारा उत्तर देने का कोई अवसर नहीं मिल पाएगा क्योंकि हम सभी नाभिकीय विध्वंस में समाप्त हो जायेंगे। क्या क्रियायोगी मानवता को इस स्थिति के प्रति जागरूक बनाने में सहायता करेंगे?

४७. जीवन शान्तिपूर्ण ढंग से जीने के लिए है न कि धर्म और आध्यात्मिकता के रूप में प्रचारित विचारों की कपटपूर्ण पद्धति में फँसे एवम् उत्तेजित बने रहने के लिए।

४८. धर्म है यथार्थता को देखने के लिए ऊर्जा का संग्रहण जबकि 'जो नहीं है' उन संभावनाओं में पलायन ऊर्जा का क्षरण है।

४९. आध्यात्मिकता लाभ और अधिकार की आकांक्षा नहीं है बल्कि अपने अन्दर उल्लास और ऊर्जा की अनुभूति है।

५०. जीवन मुक्त है। जीवन का संगीत नदी के संगीत की तरह है जो असीम सागर से मिलन की व्याकुलता में गाया जाता है। चरैवेति, चरैवेति (चलते रहो, चलते रहो)।

जय गुरू